IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

हथकरघा उद्योग में बुनकरों की वर्तमान स्थिति पर एक अध्ययन

डॉ. डी. के. वर्मा
प्राध्यापक, डॉ. बी. आर. अम्बेडकर सामाजिक विज्ञान विष्वविद्यालय, डॉ. अम्बेडकर नगर (महू) म.प्र.
गीतांजलि वर्मा
सामाजिक विज्ञान एवं प्रबंधन अध्ययन भाला ब्राउस, महू म.प्र.

सार–

कृषि के बाद हथकरघा उद्योग एक प्रमुख आर्थिक गतिविधि के लिए जाना जाता है। यह सुंदरता को धागों में पिरोने और उन्हें पहनने के लिए उत्कृष्ट कृति में बदलने की एक पुरानी परंपरा है। लेकिन समय के साथ इस संस्कृति ने कई कारणों से अपना अंकित मूल्य खो दिया है और बुनकरों की आर्थिक स्थिति धीरे–धीरे खराब हो गई है। वर्तमान पेपर हथकरघा बुनकरों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति, उनकी समस्याओं और परंपरा को जारी रखने में उनके सामने आने वाली चुनौतियों की संक्षिप्त समीक्षा करता है।

की वर्ड – हथकरघा बुनकर, विपणन, समस्याएँ, डिजाइन, यार्न।

1. प्रस्तावना – भारत में सभी कला और शिल्पों में से, हाथ से बुने हुए वस्त्र संभवतः सबसे पुराने और सबसे व्यापक रूप से मान्यता प्राप्त हैं। भारत में बुनाई का अभ्यास 5000 वर्षों से भी अधिक समय से अस्तित्व में है। इसका उल्लेख रामायण और महाभारत में भी मिलता है जो शिल्प की लंबाई के बारे में बताता है। ऐतिहासिक रूप से भारत के कुछ प्रसिद्ध हाथ से बुने हुए वस्त्र थे वाराणसी की बालूचरी साड़ी, कच्छ की बंदामी, मैसूर की जॉर्जेट, ओडिशा की संबलपुरी साड़ी, बंगाल की जामधानी साड़ी, कांचीपुरम से दक्षिण की मंदिर रेशम और अन्य। मध्यप्रदे"ा के हथकरघा बुनकरों पर केद्रित है, जो भारत के मध्य प्रांत में समृद्व माहे"वरी और चंदेरी हथकरघा कला के लिए प्रसिद्व है। इस समृद्व विरासत के बुनकरों की स्थिति को वित्तीय सुदृढता, कौ"ाल विकास, तकनीकी उन्नयन और संघ और राज्य सरकार द्वारा वि"ोष रूप से डिजाइन की गई योजनाओं और कार्यक्रमों के माध्यम से उन्हे वित्तीय और गैर – वित्तीय रूप से प्रेरित करने के प्रयासो के संदर्भ में देखने के लिए यह एक छोटा कदम है मामला तकनीकी और सामाजिक धारणा परिवर्तन पर जोर देने के साथ फै"ान उद्योग में रूझानों को चलाने वाले संरचनात्मक परिवर्तनों को संबोधित करने का प्रयास करेगा। 30 लाख से अधिक बुनकरों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार प्रदान करने वाला हथकरघा उद्योग भारत में कृषि के बाद दूसरी सबसे बड़ी आर्थिक गतिविधि है। देश में कपड़ा उत्पादन में हथकरघा का योगदान लगभग 23 प्रति"ात है। यह अपनी ग्रामीण रोजगार क्षमता के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

प्रौद्योगिकी एक महत्वपूर्ण मुद्दा है कई बार तो एक ऐसी उपर्युक्त प्रौद्योगिकी उपलब्ध कराना एक चुनौती बन जाती है, जो पुरानी प्रौद्योगिकी का स्थान ले सकें और उसके बाद भी ि"ाल्पियों की क्षमता प्रभावित न हो। वास्तव में यह एक चुनौती बनती जा रही है, क्योंकि आज के पीढी के ि"ाल्पी परम्परा से चिपके रहने में कोई ज्यादा दिलचस्पी नही रखते है। इस प्रकार के प्रौद्योगिकीय परिवर्तन अर्थपूर्ण होने चाहिए। इस प्रकार इस क्षेत्र में गंभीर शोध एवं विकास की आव"यकता है, जिससे नयी – नयी तकनीक को अपनाने के मार्ग प्र"ास्त हो सके।

हथकरघा उत्पाद देश की निर्यात टोकरी का एक प्रमुख हिस्सा रहे हैं। हथकरघा निर्यात टोकरी में साड़ी, पोशाक सामग्री और घरेलू साज–सज्जा का प्रमुख योगदान रहा है। इसके अलावा, इनमें से अधिकांश निर्यात यूरोप, अमेरिका और अन्य एशियाई देशों को हुआ है।

शोध का महत्व –

इस गतिशील युग में और फैशन के चलन में तेजी से बदलाव के कारण हथकरघा की बढ़ती मांग और दूसरी और चुनौतियाँ भी बढ़ रही हैं। बुनकरों की सामाजिक–आर्थिक स्थितियाँ, हथकरघा उद्योग की लाभप्रदता, बुनकरों के सामने आने वाली चुनौतियाँ, वित्तीय सहायता की उपलब्धता, नवीन विपणन रणनीति कुछ ऐसे मुद्दे हैं जिनका अब हथकरघा उद्योग सामना कर रहा है। इसलिए समय की मांग है कि इन मुद्दों पर विचार किया जाए और ऐसी रणनीति बनाई जाए जिससे बुनकरों और हथकरघा उद्योग को उनकी वर्तमान स्थिति में सुधार करने में मदद मिल सके।

2. साहित्य की समीक्षा –

हथकरघा उद्योग की अवधारणा पर विभिन्न शोधकर्ताओं के योगदान से संबंधित है। हथकरघा और बुनकरों पर शोध लेख, केस स्टडी, श्वेत पत्र और वर्किंग पेपर को साहित्य समीक्षा के रूप में लिया गया है। और हथकरघा उद्योग में बुनकरों पर किए गए विभिन्न अध्ययनों की समीक्षा दो व्यापक श्रेणियों के तहत की गई है:

1. हथकरघा उद्योग के समक्ष आने वाली चुनौतियों एवं समस्याओं से संबंधित अध्ययन।

2. बुनकरों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति से संबंधित अध्ययन।

वर्तमान पेपर बुनकरों और हथकरघा उद्योग को प्रभावित करने वाले कारकों का एक वर्णनात्मक और गुणात्मक विश्लेषण है, जिसमें उपलब्ध सभी साहित्य को द्वितीयक डेटा के रूप में लिया गया है। उपलब्ध साहित्य की समीक्षा दी गई है

1. हथकरघा उद्योग के समक्ष आने वाली चुनौतियों और समस्याओं से संबंधित अध्ययन–

त्रिपाठी (2009) ने वर्णनात्मक डेटा और विषय के प्रति ज्यादातर लेखकों के अवलोकन के आधार पर ''ओडिशा हथकरघाः समस्याएं और परिप्रेक्ष्य'' पर एक रिपोर्ट तैयार की। अध्ययन का मूल उद्देश्य ओडिशा हथकरघा की समस्याओं और दृष्टिकोणों का पता लगाना है। यह सुझाव दिया गया है कि इस स्तर पर उत्पादक उद्यमों, अनुसंधान और विभिन्न तरीकों से योजना बनाने में प्रमुख पद संभालने के लिए सभी प्रकार के सामान्य विशेषज्ञों और विशेषज्ञों की आवश्यकता होती है।

कर और भुइयॉ (2012) ने ''ओडिशा में एकीकृत हथकरघा क्लस्टर विकासः बारगढ़ क्लस्टर का एक मामला विश्लेषण'' नामक एक अध्ययन किया है। अध्ययन में अनूठे निष्कर्ष हैं जैसे बहुलता और असंगठित विकासात्मक प्रयास, ज्ञान कार्यकर्ता आधार की कमी, पारंपरिक कला और शिल्प की सुरक्षा के लिए अपर्याप्त उपाय, अपर्याप्त प्रशिक्षण की पहचान और उद्योग विखंडन योजना, कार्यान्वयन और निगरानी के लिए चिंता का प्रमुख क्षेत्र है।

नारजारी (2013) ने बीटीएडी (बोडोलैंड टेरिटोरियल एरिया डिस्ट्रिक्ट) में हथकरघा उद्योग के सामने आने वाली प्रमुख चुनौतियों का पता लगाने के लिए ''बीटीएडी, असम में हथकरघा उद्योग के सामने आने वाली चुनौतियों पर एक अध्ययन'' नामक एक शोध किया है।

गोस्वामी और जैन (2014) ने अर्ध–संरचित साक्षात्कार अनुसूची, अवलोकन विधि और माध्यमिक स्रोतों के माध्यम से एकत्र किए गए आंकड़ों के आधार पर, ''हथकरघा उद्योग के सतत विकास के लिए रणनीति'' नामक एक अध्ययन किया है। इस पेपर का उद्देश्य हथकरघा उद्योग की समस्याओं का पता लगाना और एक उपयुक्त रणनीति का सुझाव देना है। हथकरघा क्षेत्र के लिए उपयुक्त रणनीति विभेदीकरण रणनीति है, जिसका अर्थ है कुछ नवीन बनाना जो हथकरघा उद्योग के लिए सबसे उपयुक्त है।

सेकर और विग्नेश (2014) ने मांग की कमी, खराब गुणवत्ता और डिजाइन जैसे कुटीर उद्योगों के लिए गुणवत्ता आयामों से संबंधित उत्पाद विशेषताओं का अध्ययन करने के लिए ''मदुरै जिले में कुटीर उद्योग उत्पादों की ग्राहक धारणा और विपणन मुद्दों

पर एक अध्ययन'' शीर्षक से एक शोध किया। , खराब सौदेबाजी की शक्ति, ग्राहकों को खराब सेवा, ब्रांड प्राथमिकताएं और संभावित बाजार क्षेत्रों की अज्ञानता। सर्वेक्षण में शामिल सामाजिक जनसांख्यिकीय कारक लिंग, आयु, शिक्षा और आय हैं। एक बड़ी आबादी में किए गए सर्वेक्षण के निष्कर्ष कुटीर उद्योग निर्माताओं के लिए मूल्यवान हैं जो ग्राहक उन्मुख रणनीतियों की स्थापना करते हैं। चूंकि ग्राहकों द्वारा दी गई गुणवत्ता की धारणा और महत्व सामाजिक जनसांख्यिकीय गुणों से प्रभावित होता है और यह समय के साथ बदलता है, इसलिए कुटीर उद्योग के उत्पाद निर्माताओं को सलाह दी जाती है कि वे अपने बाजार का अच्छी तरह से विश्लेषण करें ताकि बाजार के क्षेत्रों को बेहतर ढंग से निर्धारित किया जा सके।

वर्गीस और सलीम (2015) ने भारत में हथकरघा उद्योग के महत्व का अध्ययन करने के लिए ''केरल में हथकरघा उद्योगः समस्याओं और चुनौतियों का एक अध्ययन'' शीर्षक से एक काम किया है, ताकि हथकरघा उद्योग की प्रमुख समस्याओं और चुनौतियों का विस्तृत अध्ययन किया जा सके। केरल राज्य में, और केरल में हथकरघा क्षेत्र के स्वस्थ विकास के लिए उपयुक्त उपचारात्मक रणनीतियों और नीति विकल्पों का सुझाव देना। पेपर वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक है और मुख्य रूप से द्वितीयक डेटा और प्रमुख हितधारकों के साथ साक्षात्कार के माध्यम से एकत्र किए गए प्राथमिक डेटा पर आधारित है।

रोआ और राव (2015) ने प्राथमिक और माध्यमिक दोनों स्त्रोतो से एकत्र किए गए आंकड़ों के आधार पर, ''आंध्र प्रदेश में हथकरघा उद्योग का विश्लेषण – चुनौतियां बनाम सरकारी योजनाएं'' नामक एक अध्ययन किया है। यह अध्ययन राज्य और केंद्र दोनों सरकारों द्वारा कार्यान्वित वर्तमान योजनाओं का पता लगाता है। यह आंध्र प्रदेश में हथकरघा उद्योग की वर्तमान स्थिति का भी पता लगाता है। पेपर में हथकरघा बुनकरों के सामने आने वाली विभिन्न चुनौतियों का उल्लेख किया गया है। सरकार द्वारा हथकरघा बुनकरों को संस्थागत समर्थन और प्रत्यक्ष वित्तीय सहायता के माध्यम से उठाए गए कई उपायों के बावजूद, वे असंख्य समस्याओं के कारण बुरी तरह पीड़ित हैं और लगातार नुकसान उठा रहे हैं।

बसु (2016) ने मुख्य रूप से वर्णनात्मक विश्लेषण और लेखक की अपनी जांच और विश्लेषण के आधार पर ''ओडिशा में कपड़ा, परिधान और फैशन उद्योग, संभावनाएं और चुनौतियां'' शीर्षक से एक अध्ययन किया है। पेपर का उद्देश्य ओडिशा में कपड़ा, परिधान और फैशन उद्योग की वृद्धि और संभावनाओं और उनके सामने आने वाली चुनौतियों का अध्ययन करना है। पेपर में कपड़ा उद्योग की आवश्यकता, कपड़ा मिलों के बंद होने के कारणों और इस क्षेत्र को पुनर्जीवित करने के लिए सरकार की पहल के बारे में जानकारी दी गई। निष्कर्षों से पता चला कि ओडिशा हथकरघा बढ़ रहा है लेकिन उत्पादों की गुणवत्ता, कीमत, विपणन और निर्यात के मामले में कुछ खामियां हैं। यह सुझाव दिया जाता है कि परिधान क्षेत्र को अधिक राजस्व और रोजगार अर्जित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए और राज्य सरकार द्वारा ढांचागत विकास और अधिक परिष्कृत कपड़ा योजनाएं प्रदान करने के लिए पहल की जानी चाहिए।

जैन और गेरा (2017) ने मुख्य रूप से भारत के हथकरघा क्षेत्र पर उपलब्ध माध्यमिक आंकड़ों के आधार पर ''भारत के हथकरघा उद्योग का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन'' नामक एक शोध किया है। पेपर के निष्कर्षों से पता चलता है कि बुनकरों को उत्पादन, पैकिंग, डिजाइनिंग, प्रमोशन आदि की आधुनिक तकनीकों के बारे में जानकारी नहीं है। इसलिए हथकरघा उद्योग के विकास और प्रचार के लिए इस क्षेत्र में व्यापक शोध की आवश्यकता है।

बनर्जी और चौधरी ने लेखकों के अवलोकन और अनुभव के अनुसार अवलोकन, सर्वेक्षण और माध्यमिक स्रोतों के माध्यम से एकत्र किए गए आंकड़ों के वर्णनात्मक विश्लेषण के आधार पर, ''छत्तीसगढ़ में हथकरघा उद्योगों का एक तुलनात्मक अध्ययन'' नामक एक शोध किया है। यह अध्ययन छत्तीसगढ़ के उत्तरी, दक्षिणी और मध्य क्षेत्रों में संचालित बुनाई सहकारी समितियों की संख्या, उपयोग किए जाने वाले सक्रिय करघों की संख्या और नियोजित बुनकरों की संख्या के संदर्भ में हथकरघा उद्योगों की एकाग्रता को जानने के लिए आयोजित किया गया है। अध्ययन का निष्कर्ष है कि छत्तीसगढ़ के मध्य क्षेत्र में अधिकतम जिलों, बुनाई सहकारी समितियों, सक्रिय करघों और नियोजित श्रमिकों के साथ अधिकतम हथकरघा उत्पादन होता है।

2. बुनकरों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति से संबंधित अध्ययन –

विक्टोरिया (2013) ने ''उत्तर–पूर्वी क्षेत्र में आजीविका के लिए हथकरघाः समस्याएं और संभावनाएं'' शीर्षक से एक शोध किया है, जो लोगों के आर्थिक उत्थान के लिए भारत के उत्तर–पूर्वी क्षेत्र में हथकरघा क्षेत्र की समस्याओं और दायरे का पता लगाता है। हथकरघा की वर्तमान स्थिति को समझने के लिए सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं, जनसांख्यिकीय प्रोफाइल, उत्पादन,

रोजगार, बाजार संरचना, प्रौद्योगिकी और कौशल जैसे विभिन्न मुद्दों का विश्लेषण किया जाता है। हथकरघा क्षेत्र को बढ़ावा देने में योगदान देने वाले कारकों की पहचान की गई है ताकि इसे आजीविका गतिविधि के रूप में बढ़ावा देने के लिए जुटाव किया जा सके।

महापात्रा (2014) ने मुख्य रूप से समीक्षा किए गए कागजात और साहित्य के माध्यमिक डेटा और वर्णनात्मक विश्लेषण के आधार पर, ''सांस्कृतिक पहलुओं के संकेत के साथ संबलपुरी साड़ी के लिए एक प्रबंधन दृष्टिकोण'' नामक एक पेपर लिखा है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य संबलपुरी साड़ियों के सांस्कृतिक इतिहास, बुनकरों और सहकारी समितियों की समस्याओं और संबलपुरी साड़ियों के लिए संस्थागत तंत्र के बारे में जानकारी देना है। पेपर इस निष्कर्ष और सुझाव के साथ समाप्त होता है कि संबलपुरी साड़ी कला को बरकरार रखने के लिए हमें संभावित तरीकों का पता लगाना होगा कि बुनकरों को उचित मजदूरी कैसे मिलेगी। आक्रामक विपणन और उच्च प्रतिस्पर्धा के वर्तमान परिदृश्य में व्यवसाय को कला, तकनीक और गौरव को जीवित रखने के लिए कुछ आधुनिक प्रथाओं को अपनाने की आवश्यकता है। हमारे हथकरघा क्षेत्र को अब बेहतर विपणन रणनीतियों और डिजाइन नवाचारों की जरूरत है। हम अपने पैटर्न के साथ प्रयोग कर सकते हैं और अंतरराष्ट्रीय बाजार के अनुरूप अधिक रचनात्मकता जोड़ सकते हैं।

तनुश्री (2015) ने गहन साक्षात्कार, केस अध्ययन और केंद्रित आंकड़ों के आधार पर ''वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत के पारंपरिक हथकरघा बुनकरों की वर्तमान स्थिति का एक अध्ययन'' शीर्षक से एक काम किया है। सामूहिक चर्चा। यह पेपर वाराणसी में हथकरघा बुनाई की गिरती स्थिति के पीछे के कारणों की जानकारी देता है। इस प्रकार अध्ययन इस सुझाव के साथ समाप्त होता है कि औद्योगीकरण के कारण, वाराणसी के हथकरघा बुनकरों ने अपना प्रतिष्ठित पारंपरिक उद्योग खो दिया है, इसलिए नीति निर्माता को हथकरघा क्षेत्र के महत्व को समझना चाहिए और हथकरघा बुनकरों के उत्थान के लिए आवश्यक धन आवंटित करना चाहिए।

अनुसूया और चिन्नादोराई (2015) ने हथकरघा उत्पादों को खरीदने और उपयोग करने के दौरान कोयंबटूर में ग्राहकों की जागरूकता के स्तर का विश्लेषण करने के लिए ''कोयंबटूर जिले के विशेष संदर्भ में हथकरघा उत्पादों के प्रति उपभोक्ता जागरूकता और संतुष्टि पर एक अध्ययन'' नामक एक अध्ययन किया है। उपरोक्त अध्ययन से पता चलता है कि उपभोक्ता हथकरघा उत्पादों के बारे में बहुत जागरूक हैं लेकिन इससे हथकरघा विक्रेता को कोई लाभ नहीं होता है। निष्कर्ष यह है कि निजी और सरकारी संगठन उत्पादों की गुणवत्ता और उपलब्धता बढ़ाने के लिए कदम उठाते हैं

सदानंदम (2016) ने हथकरघा बुनकर समाजों के बीच प्रचलित सामाजिक स्थितियों का अध्ययन करने के लिए ''हथकरघा बुनाई समाजों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति – वारंगल जिले का एक केस अध्ययन'' नामक एक शोध किया है, जिसका उद्देश्य समाज में उनके स्थान का पता लगाना है। हथकरघा बुनकर समाजों की आर्थिक स्थितियों का विश्लेषण करें और उनकी आर्थिक स्थिति का पता लगाएं।

3. उभरते मुद्देः–

देश में हर जगह हथकरघा उद्योग अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रहा है। उद्योग को कम उत्पादकता, आवश्यक विपणन संरचना की कमी, कपास की आवश्यक मात्रा और उत्पादन प्रक्रियाओं के अपर्याप्त आधुनिकीकरण आदि का सामना करना पड़ा। हथकरघा बुनाई जो ग्रामीण बुनकरों को आजीविका प्रदान कर रही थी, अब कई कारकों के कारण खराब स्थिति में है। संकट उत्पन्न करने वाले कुछ कारक निम्नलिखित थे।

1. कच्चे माल की कमी या अनुपलब्धता – धागे की कमी और अपर्याप्त आपूर्ति हथकरघा उद्योग के प्रदर्शन पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रही है। हथकरघा क्षेत्र में प्रमुख इनपुट हैंक यार्न की आपूर्ति अविश्वसनीय और अनियमित रही है। यह मुख्य रूप से यार्न की कीमतों में भारी वृद्धि के कारण था कि हथकरघा उद्योग को वर्ष 1984, 1986, 1988 और 1991 में चार बार संकट का सामना करना पड़ा।

2. बढ़ती लागत – हथकरघा उत्पादन केंद्रों में इनपुट की बढ़ी हुई कीमतें एक प्रमुख समस्या रही हैं। व्यक्तिगत बुनकरों के लिए समस्या कहीं अधिक गंभीर है। हथकरघा बुनाई के लिए सूती धागा प्रमुख इनपुट है। हाल के वर्षों में यार्न की कीमतों में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है।

3. उत्पादन की लागत में वृद्धि – कच्चे माल की कीमतों में वृद्धि के परिणामस्वरूप, हथकरघा कपड़े की उत्पादन लागत भी बढ़ जाती है। गोस्वामी ने अपने अध्ययन में कहा कि पावरलूम उत्पादन की तुलना में हथकरघा उत्पादन लगभग 22 प्रतिशत अधिक महंगा है।

4. कताई उद्योग का उदय और हथकरघा उद्योग का पतन – इस उद्योग की लगातार और तेज गिरावट के कई कारण हैं। देश में कताई मिलें आवश्यक कम गिनती के धागों का उत्पादन करने में लगातार बढ़ रही हैं, जिनका उपयोग ज्यादातर घरेलू वस्त्रों में किया जाता है।

5. हथकरघा से पावरलूम में बदलाव – पिछले कुछ दशकों में हथकरघा से पावरलूम की ओर ध्यान देने योग्य बदलाव आया है। कुछ हथकरघा बुनकर अपने हथकरघा को पावरलूम में परिवर्तित कर रहे हैं क्योंकि पिछले कुछ दशकों में हथकरघा की व्यवहार्यता बहुत तेजी से कम हो रही है।

6. प्रौद्योगिकी विकास का अभाव – बुनाई एक पारंपरिक एवं वंशानुगत व्यवसाय है। बदलती प्रौद्योगिकियों, तरीकों और आवश्यकताओं के बारे में जानकारी, जागरूकता और ज्ञान की कमी के कारण बुनकर उत्पादन और डिजाइन के पारंपरिक तरीकों का पालन कर रहे हैं। इन करघों की उत्पादन क्षमता कम है और काम कठिन है। इस क्षेत्र को संगठित क्षेत्रों से सस्ती कीमतों पर उपलब्ध बेहतर गुणवत्ता वाले उत्पादों से कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ता है।

7. विपणन संबंधी मुद्दे – उद्योग बिक्री उन्मुख दर्शन का अनुसरण कर रहा है। अपर्याप्त विपणन सेवाओं और सुविधाओं के कारण समय–समय पर स्टॉक जमा होता रहता है, जिसके परिणामस्वरूप बुनकरों में बेरोजगारी बढ़ जाती है।

1. बाजार संबंधी जानकारी की उपलब्धता का अभावः– हथकरघा उत्पादों के बाजार के संबंध में कोई विश्वसनीय जानकारी उपलब्ध नहीं है। इससे बाजार के अंत में बाधाएँ पैदा होती हैं जिसके परिणामस्वरूप ग्राहक असंतुष्ट होते हैं। ग्राहकों की प्रतिक्रिया नहीं मिलने के कारण बुनकर बाजार की मांग और नए डिजाइन व रंगों से अनजान हैं। इससे उनकी रचनात्मकता और नवीनता में बाधा आती है।

2. उत्पाद की विशेषताओं के बारे में जागरूकता की कमीः– हथकरघा कपड़ा बहुत नरम और त्वचा के लिए अच्छा होता है। यह गैर–एलर्जी सिंथेटिक फाइबर है। वनस्पति डाई का प्रयोग इसे स्वास्थ्य अनुकूल बनाता है। सबसे बड़ी विशेषताओं में से एक ग्राहक की पसंद के अनुसार अनुकूलन करने का लचीलापन है। अपनी अच्छी गुणवत्ता और अतिरिक्त कढ़ाई के कारण यह अधिक पसंदीदा है। ग्राहकों को हथकरघा उत्पादों के इन गुणों के बारे में शिक्षित नहीं किया जाता है।

3. हथकरघा का अपर्याप्त प्रचार और विज्ञापनः– हथकरघा क्षेत्र अन्य कपड़ा क्षेत्र की तुलना में अपने उत्पाद के प्रचार और विज्ञापन में बहुत पीछे है। आम तौर पर, प्रचार केवल सीमित दुकानों वाली प्रदर्शनियों और मेलों के माध्यम से होता है। इसलिए ग्राहक उपलब्ध होने पर ही खरीदारी करता है और अनुपलब्ध होने पर अन्य प्रतिस्पर्धी उत्पादों पर स्विच करता है।

4. गुणवत्ता मानकीकरण का अभावः– हथकरघा बेहतरीन गुणवत्ता के कपड़े के उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है। यह कालीन, साज–सामान और बढ़िया डिजाइन जैसे कई मामलों में अद्वितीय विक्रय प्रस्ताव का उपयोग करता है। हालाँकि उत्पाद की गुणवत्ता और मानकीकरण का नियमित रूप से उल्लेख नहीं किया जाता है और उत्पादों के स्थायित्व, सिकुड़न आदि जैसे गुणवत्ता मानकों की जाँच करने की कोई प्रक्रिया नहीं है।

5. हैंडलूम लॉजिस्टिक्स का अनुचित प्रबंधनः– हैंडलूम लॉजिस्टिक्स को वैज्ञानिक तरीके से किया जाना चाहिए। बड़े स्टॉक को रखने और उसे बनाए रखने में आने वाली लागत की सटीक गणना होनी चाहिए। पैसे की कोई रुकावट नहीं होनी चाहिए और बाद में ब्याज का बोझ भी नहीं पड़ना चाहिए. आम तौर पर तैयार उत्पादों की आपूर्ति के मामले में अक्षमता होती है। अनुचित

विपणन की कमी के कारण, विपणक के पास बड़ा स्टॉक अवरुद्ध हो जाता है। कुप्रबंधन के कारण कुछ सहकारी समितियाँ घाटे में चली जाती हैं।

6. निर्यात क्षमता का दोहन करने में असमर्थः– हथकरघा उत्पादों के लिए निर्यात की व्यापक संभावनाएं हैं। लेकिन इसकी क्षमता का पूरी तरह से दोहन नहीं किया गया है। हथकरघा निर्यात संवर्धन परिषद की कार्यप्रणाली को चुस्त–दुरुस्त किया जाना चाहिए।

7. साप्ताहिक हाटः– जिन्हें छोटे और सीमांत स्वतंत्र बुनकरों के लिए विपणन सुविधा के रूप में काम करना चाहिए था, वे उस उद्देश्य को पूरा नहीं कर रहे हैं जो उन्हें पूरा करना चाहिए। उन्हें बुनकरों और उपभोक्ता के बीच सीधा संबंध प्रदान करना चाहिए। लेकिन उनकी मूल अवधारणा को भुला दिया गया है और वे छोटे बुनकरों के लिए बिना किसी लाभ के किसी भी अन्य वाणिज्यिक परिसर की तरह हैं।

8. वित्तीय समस्या – हथकरघा उद्योग एक ऐसा नाजुक संगठन है, जो हर समय पूरी तरह से पूंजी की कमी से जूझ रहा है। राष्ट्रीय और राज्य बजट में हथकरघा के लिए आवंटन कम किया जा रहा है। ये आवंटन उद्योग की आवश्यकताओं और इसकी रोजगार क्षमता के लिए बहुत अधिक अनुपातहीन हैं।

9. संगठनात्मक समस्याएँ – पिछले चार दशकों के लगातार प्रयासों के बावजूद सहकारी समितियाँ देश के कुल बुनकरों को आकर्षित नहीं कर सकीं। अधिकांश लोग अभी भी बिचौलियों के अधीन काम कर रहे हैं। उन्हें अपनी पसंद का कपड़ा तैयार करने या उत्पाद की कीमत तय करने का अधिकार नहीं है। या तो मास्टर बुनकर या बिचौलिए सब कुछ तय करेंगे।

10. खराब संस्थागत प्रबंधन – हथकरघा क्षेत्र को सहकारी मॉडल अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया गया और सरकारी नीति ने गांव तालुका स्तर पर प्राथमिक सहकारी समितियों और राज्य स्तर पर शीर्ष समितियों के गठन और संचालन की सुविधा प्रदान की। इसके अलावा, व्यक्तिगत बुनकरों को समर्थन देने की दृष्टि से राज्य हथकरघा निगमों को भी बढ़ावा दिया गया। दुर्भाग्य से, कई शीर्ष सोसायटी हथकरघा निगम वित्तीय घाटे, पेशेवर प्रबंधन की कमी, अत्यधिक स्टाफिंग और खराब विपणन और वितरण चौनलों जैसे कई कारणों से निष्क्रिय हो गए हैं। इसलिए, ये संगठन बुनकर समुदाय के लिए पर्याप्त काम की व्यवस्था करने में सक्षम नहीं हैं, जिससे प्राथमिक सहकारी समितियों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।

11. पावरलूम की अनुचित प्रथाएँ – पावरलूम हथकरघा को दी गई रियायत का दुरुपयोग करने और हथकरघा की आड़ में काम करने में सक्षम थे। हथकरघा उत्पाद तेजी से पावरलूम द्वारा कॉपी किए जा रहे हैं और तेजी से तकनीकी विकास के कारण कम लागत पर उत्पादन करने में सक्षम हैं।

12. बुनियादी ढाँचा और निवेश – हथकरघा क्षेत्र में निवेश अब तक इनपुट आपूर्ति लागत तक ही सीमित है। क्षेत्रीय विकास पर कोई निवेश नहीं हैय जबकि वर्क शेड–कम–हाउसिंग और प्रोजेक्ट पैकेज योजनाएं जैसी कुछ टुकड़े–टुकड़े परियोजनाएं हैं जो केवल मौजूदा स्थितियों को कायम रखती हैं। सामान्य सुविधाएं जैसे गोदाम, ऋण सुविधाएं (आस–पास के बैंक), सड़कें, उचित स्वच्छता आदि कहीं भी विकसित नहीं की गई हैं।

13. डिजाइन और पेटेंट – हथकरघा डिजाइन सुरक्षित नहीं हैं। परिणामस्वरूप, निवेशकों की इसमें कोई दिलचस्पी नहीं है कि ऐसा न हो कि वे जोखिम उठाएं और जो लाभ की नकल करें। संरक्षण विकल्पों में हथकरघा, रेशम, जूट चिह्नों का विकास और भौगोलिक संकेत अधिनियम के तहत पंजीकरण शामिल है।

14. डिजाइन में सुधार – हथकरघा क्षेत्र को बाजार में बदलाव के जवाब में अपने डिजाइन को बढ़ाना चाहिए, लेकिन अड़चनें कई हैं। परिवर्तन की कमी इसलिए नहीं है कि बुनकर परिवर्तन के लिए उत्तरदायी नहीं है, जैसा कि बंधा हुआ है। बल्कि, यह निवेशक की जोखिम लेने और बदलाव को प्रभावित करने के लिए बुनकरों को प्रोत्साहन प्रदान करने की अनिच्छा के कारण है। इसके अलावा, सरकार हथकरघा सहकारी समितियों को डिजाइन सहायता प्रदान करने के लिए राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान (निफ्ट) को पर्याप्त अनुदान प्रदान कर रही है, लेकिन इससे कुछ खास हासिल नहीं हुआ है।

15. राष्ट्रीय कपड़ा नीति का प्रभाव – मिलों और बिजली करघों से असमान प्रतिस्पर्धा के खिलाफ हथकरघा की सुरक्षा पहले से ही हमारी कपड़ा नीति की आधारशिला रही है। इसे खारिज कर दिया गया है और इसके साथ ही ग्रामीण रोजगार के लिए इसके सभी महत्व वाले हथकरघा उद्योग को बचाने की कोई भी संभावना खत्म हो गई है। न केवल मिलों और बिजली करघों पर सभी क्षमता प्रतिबंध हटा दिए गए हैं, बल्कि उन्हें बाजार पर तेजी से कब्जा करने में सक्षम बनाने के लिए सभी संभावित वित्तीय, राजकोषीय और अन्य सहायता की पेशकश की गई है, जिससे हथकरघा के लिए कुछ नियंत्रित स्थान को छोड़कर बहुत कम जगह बची है।

16. सरकारी योजनाओं के कार्यान्वयन में विफलता – कार्यान्वयन के तहत विभिन्न सरकारी नीतियों और योजनाओं के बारे में बुनकरों को जानकारी का अभाव, बुनकर समुदाय की घटती किस्मत का एक महत्वपूर्ण कारण है। कभी–कभी, कार्यान्वयन एजेंसियों और संबंधित सरकारी विभागों के पास पूरी जानकारी नहीं होती है, जिसके परिणामस्वरूप कार्यान्वयन में गंभीर खामियां होती हैं।

17. अनुसंधान की जरूरतें – हथकरघा उद्योग के तकनीकी और संगठनात्मक पहलुओं पर व्यापक शोध आवश्यक है। हथकरघा उद्योग की अनुसंधान आवश्यकताओं को शायद ही कभी व्यवस्थित रूप से आगे बढ़ाया गया हो। प्री–लूम प्रक्रियाओं सहित बुनाई प्रक्रिया के प्रत्येक चरण में तकनीकी अनुसंधान करने वाले अनुसंधान संस्थानों की आवश्यकता होती है, क्योंकि इन शुरुआती चरणों में तकनीकी सुधार की आवश्यकता सबसे अधिक महसूस की जाती है। डिजाइनों के साथ–साथ मौजूदा बाजारों का अनुसंधान और दस्तावेजीकरण भी किए जाने की आवश्यकता है।

4.सुझाव –

किसी भी अन्य उद्योग की तरह, हथकरघा उद्योग को भी कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ रहा है। खासकर पावरलूम सेक्टर में प्रतिस्पर्धा आने वाले दिनों में और बढ़ेगी। अपनी बाजार हिस्सेदारी बनाए रखने और नए बाजार क्षेत्रों में प्रवेश करने के लिए हथकरघा क्षेत्र को अनुकूल नीति पहलों द्वारा समर्थित कुछ सुविचारित और स्पष्ट रूप से व्यक्त उपचारात्मक रणनीतियों की आवश्यकता है। पूर्वगामी विश्लेषण के आधार पर निकाले गए ऐसे कुछ सार्थक उपाय नीचे दिए गए हैं:

1. हथकरघा उद्योग को तैयार करने के लिए, सरकार को हथकरघा विभाग में एक 'डेटा बैंक' बनाने के लिए अपने फोकस और गतिविधियों और कार्यक्रमों को फिर से उन्मुख करने की पहल करनी होगी ताकि बाजार की जानकारी के लिए एक विश्वसनीय सूचना प्रणाली का निर्माण किया जा सके।

2. उत्पादों, कुल बाजार वितरण और उनके चौनलों, उपभोक्ताओं की प्रतियोगिताओं, आयात नियमों और विनियमों, आर्थिक कारकों और विशिष्ट बाजार विशेषताओं और मूल्य रुझानों, हथकरघा उत्पादों की उपलब्धता और आवश्यकताओं पर बाजार तथ्य एकत्र करने के लिए कार्यात्मक केंद्र स्थापित करने की सलाह दी जाती है। और निर्यात व्यवसाय में शामिल बुनकर सहकारी समितियों के बीच इस जानकारी का प्रसार करें।

3. इस उद्योग में बुनकरों और अन्य श्रमिकों को लंबित संवितरण (जैसे, सब्सिडी, छूट आदि) का पूरा भुगतान करने की आवश्यकता है ताकि उन्हें अपनी पूरी क्षमता लगाने के लिए प्रेरित किया जा सके।

4. वर्तमान में इस उद्योग खंड की लागत प्रतिस्पर्धात्मकता बहुत खराब है। यह बदले में उत्पाद के लाभ मार्जिन और बिक्री को प्रभावित करता है। उन्नत प्रौद्योगिकियों को अपनाने, प्रशिक्षित और कुशल कर्मचारियों की नियुक्ति आदि के माध्यम से लागत को नियंत्रित करने के लिए सख्त उपाय।

5. लागत प्रभावी वितरण चौनलों के माध्यम से हथकरघा उत्पादों के सार्थक विपणन के लिए हथकरघा कर्मचारियों को विशेष प्रशिक्षण दिए जाने की आवश्यकता है।

6. सरकार को सरकारी स्वामित्व वाले उद्यमों को हथकरघा उत्पाद खरीदने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। उसे सरकारी कर्मचारियों पर हर हफ्ते में कम से कम एक बार ऐसे परिधान पहनने के लिए जोर देना चाहिए ताकि ऐसे उत्पादों की मांग को बढ़ावा दिया जा सके।

हथकरघा उत्पादों के निश्चित लाभों को देखते हुए, सरकार की सक्षम नीति पहलों द्वारा समर्थित उपरोक्त सार्थक रणनीतियों से अच्छे परिणाम मिलेंगे। आइए आशा करें कि सरकारी नीतियों से प्रेरणा लेते हुए हथकरघा उद्योग निकट भविष्य में गति पकड़ेगा और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में प्रभावशाली ऊंचाई हासिल करेगा।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

[1] Jain. D. C. and Gera. R. (2017), *An Analytical Study of Handloom Industry of India*, International Journal of Science Technology and Management, ISSN: 2394-1537(O) 2394-1529(P), Vol. 6(01)

[2] Sadanandam. B. (2016), *Socio-Economic Conditions of Handloom Weaving Societies- A case study of Warangal District*, International Journal in management and Social Science, ISSN: 2321-1784, Vol. 3(9), pp. 296-300

[3] Das. D.C. (2016), *Handloom Weaver's Co-operative Socities in Assam- A Study*, International Research Journal of Interdisciplinary & Multidisciplinary Studies (IRJIMS), ISSN: 2394-7969(O), 2394-7950(P), Vol. 2(9), pp. 69-75

[4] Basu. B. (2016), *Textile Garment and fashion Industry in Odisha, Prospects and Challenges*, Imperial Journal of Interdisciplinary Research (IJIR), ISSN: 2454-1362, Vol. 2(10)

[5] Rao. K.S.N. and Rao, T.U.M. (2015), *An Analysis of Handloom Industry in Andhra Pradesh- Challenges vs Government Schemes*, International Journal of Engineering Technology Science and Research (IJETSR), ISSN: 2394-3386, Vol. 2(9)

[6] Varghese.A. and Salim.M.H. (2015), *Handloom Industry in Kerala: A Study of the Problems and Challenges*, International Journal of Management and Social Science Research Review, Vol 1(14), pp 347

[7] Patra. S. and Dey. S.K. (2015), *Profitability Analysis of Handloom Weavers: A Case Study of Cuttack District of Odisha*, Abhinav National Monthly Referred Journal of Research in Commerce and Management, ISSN: 2277-1166, Vol. 4(8)

[8] Anusuya. R. and Chinnadorai. K.M. (2015), *A Study on Consumer Awareness and Satisfaction towards Handloom Products with special reference to Coimbatore District*, International Journal in Management and Social Science, ISSN: 2321-1784, Vol. 3(9), pp. 296-300.

[9] Tanushree. S. (2015), *A Study of the Present Situation of the Traditional Handloom Weavers of Varanasi Uttar Pradesh India*, International Research Journal of Social Science, ISSN: 2319-3565, Vol. 4(3), pp. 48-53.

[10] Mohapatra. N. (2014), *A Management Approach to Sambalpuri Sari with a Sign of Cultural Facet*, Odisha Review.

[11] Goswami. R. and Jain. R. (2014), *Strategy for Sustainable Development of Handloom Industry*, Global Journal of Finance and Management, ISSN: 0975-6477, Vol. 6(2), pp. 23-28.

[12] Narzary. J. (2013), *A Study on the challenges faced by the handloom industry in BTAD, Assam*, Global Research Methodology, ISSN: 2249-3000, Vol. 2(8).

[13] Victoria. D. (2013), *Handlooms for Livelihood in North-Eastern Region: Problems and Prospects*, Journal of Rural Development, Vol. 32(4), pp. 427-438.

[14] Kar. S.K. and Bhuyan. B. (2012), *Intergrated Handloom Cluster Development in Odisha: A case analysis of Bargarh Cluster*, Parikalpana : KIIT Journal of Management, ISSN: 0974-2808, Vol 8, pp. 26-44.

[15] Banerjee. S. and Choudhary, S., *A Comparative Study of Handloom Industries in Chhatisgarh*, International Journal of Innovative Research in Technology and Science (IJIRTS), ISSN: 2321-1156, Vol. 2(3)